रावण कौन? उसे जलाने की विधि

ब्रह्माकुमार:-भगवानभाई, शांतिवन, आबूपर्वत

रावण का बुत बनाकर हर वर्ष जलाते है। लेकिन थोड़ी सोचने की बात है कि कोई भी चीज एक बार जलाने के बाद फिर नष्ट हो जाती है। दुबारा जलाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। लेकिन रावण को हर वर्ष क्यों जलाते है? वह भी पिछले वर्ष से १ फुट बड़ा बनाकर जलाया जाता है। इसका कारण क्या है?

वास्तव में रावण ही मनुष्य के अंदर जो मनोविकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) है उसका प्रतिक है। ५ विकार नारी के व ५ विकार नर के इसको ही दस शीश का रावण कहा है। इस रावण अर्थात विकारों की प्रवेशता मनुष्य के अंदर द्वापरयुग से हुई। तब से दु:ख, अशांति, भ्रष्टाचार, गरीबी की शुरुआत हुई। यह विकार मनुष्य के दुश्मन है इसलिए बुत बनाकर जलाने की प्रथा है। मनुष्य के अंदर जो विकार है वे दिन प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं। इसलिए उसको हर वर्ष १ फुट बडा बनाकर जलाते है। स्थूल रुप में तो बुत बनाकर जलाते हैं लेकिन जो विकार है उसको तो छोड़ते नही। इस कारण बर्तमान समय में विश्व की हर आत्मा में विकारों की प्रवेशता है। इन विकारों के वश में होकर न चाहते भी हर आत्मा द्वारा बुरा कर्म हो रहा है।

काम विकार के वश होने कारण ही नर्कवाशी बन गये। काम विकार हीसबसे बड़ा दुश्मन है। जो मनुष्य को आदि मध्य अंत दु:ख पहुँचाता है। क्रोध वश होने से कहते है घर में पानी के घडे भी सूख जाते है। क्रोध मनुष्य का खून भी सूख जाता है। लोभ वश होने से मनुष्य सदा असंतुष्ट, अतृप्त रहता है। जिस तरह चीटियँ पीनी की चाशनी से आकर्षित होकर उसमें फँस जाती है। उसी तरह लोभी मनुष्य भी लोभ के कारण अपना अनमोल जीवन खो बैठता है। मोहवश होकर मनुष्य किसी व्यक्ति वस्तू को अपना सहारा मानता है। वास्तव में मोह की रस्सीयाँ बहुत सुक्ष्म और दु:ख देनेवाले होती है। अहंकार वश होकर मनुष्य में कितने भी गुण कला होते हुए भी वह अपने द्वारा गुण और कला से दूसरों को सुख दे नही सकता। जैसे खजूर का पेड देखने में बाहर से सुंदर लगता है लेकिन किसी को छाया भी दे नही सकता न कोई उसके फलो के पास जा सकता है। इस तरह अहंकारी मनुष्य के पास गुण कला होते हुए भी केवल अहंकार के कारण दूसरों को सुख नही दे सकता।

इस तरह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इस विकार रुपी रावण के वश में आत्मा रुपी सीता इस कलियुगी शोक वाटिका में है। इस शोक वाटिका में चारों तरफ दु:ख, अशांति, लडाई झगड़े ही नजर आते है। हर आत्मारुपी सीता निराश है। इस दु:ख अशांति से (रावण से)

छुडाने के लिए निराकार परमात्मा राम को पुकार रही है। मनुष्य की अधोगति का कारण भी यही विकार है। एक समय था जव सभी निर्विकारी थे तब भारत सुजलाम-सुफलाम था। दही, दूध की नदियाँ बहती थी। सोने चांदी के महल थे। गया और सिंह एक घाट पर जल पीते थे। लेकिन आज इस कलियुग में भाई-भाई एक साथ बैठकर खाना भी नहीं खाते है। पीने के लिए पानी नही रहने के लिए घर नहीं। इन सबका क्या है? इन ५ विकारों वश होकर कर्म करना यही उसका कारण है।

इसलिए अब फिर से स्वयं निराकार परमात्मा जो सर्व के दिल को आराम देता है, वह इस धरती पर आकर सभी आत्मा रुपी सीताओं को इस रावण से अर्थात विकारों से छुडाकर अशोक वाटिका में ले जाने आये है। हमें अब केवल इन विकारों पर ज्ञान और योगबल द्वारा जीत प्राप्त करनी है। केवल रावण का बुत बनाकर जलाना नही के लिए मुक्त होना है। विकारों को जलाना है अर्थात समाप्त करना है।

रावण को यथार्थ विधि से जलाने के लिए परमात्मा यही शिक्षा देते है कि:-

१. काम को जलाने की विधि:-सर्व कासे भाई भाई की दृष्टि से देखो:- हम सभी ज्योति बिंदू आत्मा है। यह शरीर तो मुझेसे भिन्न ५ तत्वों से बना हुआ मेरा बस्त्र है। मै पवित्रता के सागर की संतान पवित्र आत्मा हूँ। हम सभी आत्माये भाई भाई है। हरएक आत्मा भाई ने नर वा नारी का शरीर धारण कर पार्ट बजा रही है। इस तरह अगर हम देहभान से परे सर्व को आत्मा भाई-भाई इस दृष्टि से देखेंगे तब काम वासना जागृत नही होगी।

२. क्रोध को जलाने की विधि:-

हरएक आत्मा का अपना अपना पार्ट है, वास्तव में संसार तो विभिन्नता का बना हुआ एक खेल है। जिसमें हरएक अपने अपने पार्ट प्रमाण ठीक ही कर रहा है। इस प्रकार की विचार धारा अपनाने से भी क्रोधमुक्त बन जायेंगे।

हरएक के प्रति रहम भावना रखो तो तो कोई गलत कार्य होने से भी हम अपनी अवस्था क्रोधमुक्त बना सकेंगे।

स्वपरिवर्तन द्वारा तथा अपने प्रेमपूर्वक व्यवहार द्वारा भी क्रोधमुक्त बन जायेंगे।

३. लोभ को जलाने की विधि:- अब घर जाना है यह स्मृति रखने से, हम धरती पर आकर सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग कलियुग इस चार युगों का खेल खेला है। अब यह सृष्टि नाटक पूरा हुआ है। अब हमें अपने घर चांद, सूरज तारांगण से पार जाहाँ से आये थे वही वापिस जाना है। इसलिए अब हमें जो विनाशी चीजे हैं उसमें बुद्धि नही लगानी है क्योंकि वह हम साथ ले नही जा सकेंगे। केवल अपने गुणों ज्ञान से सजना है यही सर्वश्रेष्ठ कमाई है। तब स्थूल वस्तू

वैभब के लोभ से छूट जायेंगे। जैसे सिंकदर बादशाह समान हमें भी खाली हाथ जाना है यह स्मृति से भी लोभ छूट जायेगा। सबकुछ विनाशी है।

४. मोह को जलाने की विधि:- सदा याद रहे देहधारी दु:खदायी, वास्तव में इस विनाशी दुनिया की कोई भी व्यक्ति वस्तू अपने नहीं है। खुद का देह भी साथ नही आयेगा। सबकुछ परिवर्तन होनेवाला हैं। केवल परमात्मा ही सबका सहारा है। वही सत्यम् शिवम और सर्व से सुंदर है। इसलिए परमात्मा में मोह रखना है। तब बाकी सब विनाशी व्यक्ति, वस्तु से मोह छुट जायेगा।

५. अहंकार को जलाने की विधि:- जो भी अपने पास गुण, कला, शक्ति आदि है वह परमात्मा की देन है हम केवल निमित्त है। करवनकराहार परमात्मा मेरे से करता है। यह स्मृति में रखने से अहंकार छुट जायेगा। सब कुछ विनाशी है यह भी स्मृति में रखना है।

इस विधि को अपना कर रावण को जलाना है। इसके साथ ही जैसे दिखाते है कि नाभी में रावण की मरने की जगह थी। तो वास्तव में रावण के प्रवेशता का मुख्य कारण है देहभान। जब हम देहभान में आते है तब स्त्री पुरुष का भान आता है। फिर यह काम, क्रोध, लोभ आदि आदि विकार आ जाते है। इसलिए जिताना हम आतमअभिमानी अर्थात आत्मस्मृति में रहेंगे उतना इस विकारों से हम कोसो दूर रहेंगे। हमारे अंदर से रावण मरता जायेगा।

इस विधि से इस वर्ष रावण को जलाना है। तब ही कहेंगे सच्चा सच्चा दशहरा मनाया। इस विधि अगर हम दशहरा मनायेंगे तब ही हमारे जीवन में विश्व में फिर से सुखों के, खुशियों के दिन आयेंगे घर घर में लक्ष्मी आयेगी अर्थात सभी सम्पन्न बन जायेंगे इसलिए दशहरा के बाद दिवाली का त्यौहार मनते है। अगर हम रावण को यथार्थ नही जलायेंगे तो दिवाली का सुख अर्थात भविष्य में आनेवाली सतयुगी दुनिया का सुख ले नहीं पयोग। क्योंकि उस दुनिया में केवल वही जा सकता है जो इन ५ विकारों पर जीत पाता है। तो अब हमें ईश्वरीय ज्ञान योग द्वारा रावण को विधिवत जलाकर सच्चा सच्चा दशहरा मनाना है। ऐसे दश्हरे की रावण के उपर विजय पाने की आप सबको मुबारक हो मुबारक हो। ऐसी विधि से दशहरा मनाने से फिर वर्ष-वर्ष दशहरा मनाने की जरुरत नही पडेगी। विश्व में फिर से रामराज्य आयेगा। हर मानव के मन का अंधकार तथा विश्व का अंधकार समाप्त होगा।

रावण दस मुख वाला कीडा। इसकी कुलबुलाहट की माया है। श्रेष्ठ संकल्प, परमात्मा बाप की याद, दैवी गुण, आत्मास्थिति रुहानी दृष्टि, वृत्ति धारण करेंगे तब रावण अर्थात मनोविकार खत्म होंगे। यही है रावण जलाने की विधि। यही है दशहरा

ओम् शांति